موضوع الخطبة : الإيمان باليوم الآخر– جزء 1

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي

शीर्षक:

आखिरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े—क़िस्त 1

प्रथम उपदेश:

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़तं(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)मं और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्धारा उन्हें माकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًاوَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون﴾.

अर्थातःक्या तुम यह सोचते हो कि हमने तुम्हें यूं ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी ओर लौटाए ही न जाओगे।

आखितर के दिन को योमुल मीआ़द इस लिए कहा गया है कि उसके बाद कोई दिन न होगा,वह इस प्रकार कि स्वर्ग वासी अपना स्थान ग्रहण करलेंगे और नरक वासी अपने स्थान पे पहुंच जाएंगे,यह दिन क़यामत के दिन से भी जाना जाता है क्योंकि उस दिन लोग अल्लाह के समक्ष खड़े होंगे।

ए मोमिनो!आखिरत के दिन पर ईमान लाने में छ कार्य सम्मिलित हैंःसूर में फूंक लगाना,मख्लूक़ो(जीवों)का दोबारा उठाया जाना,क़यामत के अन्य चिंहों का उतपन्न होना,लोगों का ह़शर के मैदान में जमा होना,हिसाब व किताब एवं जज़ा व सज़ा,स्वर्ग एवं नरक में प्रवेश।

1.अल्लाह के बंदो!सूर में फूंक लगाना क़यामत की विशाल चिन्हों में से प्रथम चिन्ह होगी,इसी के माध्यम से क़यामत के घटित होने की सूचना दी जाएगी,सूर का अर्थ वह सींग है जिसमें सूर के देवदूत–अर्थात इसराफील–दो बार फूंक मारेंगे,प्रथम बार फूंक लगाने से समस्त जीव बेहोश हो जाएंगे,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन हैः

﴿وما ينظر هؤلاء إلا **صيحة واحدة** ما لها من فَواق﴾

अर्थातःउन्हें केवल एव चीज की प्रतीक्षा है जिसमें कोई ढील नहीं है।

अर्थातःउसके पश्चात न उन्हें होश आएगा और न वह दुनिया में लौट पाएंगे,फिर द्वितीय बार सूर फूंका जाएगा जिस से समस्त शव उठ खड़े होंगे,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन हैः

﴿فإنما هي زجرة واحدة فإذا هم ينظرون﴾.

अर्थातःवह तो केवल एक जो़र की झिड़की है कि अचानक यह देखने लगेंगे।

ज्ञात हुआ कि प्रथम बार फूंक मारने से जीव मर जाएंगे एवं द्वितीय बार फूंक मारने से शव जीवित हो जाएंगे।

कुरान में सूर को الناقور भी कहा गया है,जैसा कि सूरह **अलमुद्दसिर** में आया हैः

﴿فإذا نقر في الناقور﴾

अर्थातःजब कि सूर में फूंक मारी जाएगी।

2.आखिरत के दिन पर ईमान लाने में क़यामत के विशाल चिन्हों पर ईमान लोने भी शामिल है,जैसे भूमि में भूकंप का आना,जैसा कि अल्लाह का कथन हैः

﴿إذا زلزلت الأرض زلزالها﴾

अर्थातःजब भूमि पूरी तरह से झिनझोड़ दी जाएगी।

तथा यह किः ﴿إذا رجت الأرض رجا﴾.

अर्थातःजबकि भूमि भूकंप के साथ हिला दी जाएगी।

क़्यामत का एक विशाल चिन्ह यह है कि आकाश फट जाएगा,जैसा कि अल्लाह का कथन हैः ﴿فإذا انشقت السماء فكانت وردة كالدِّهان﴾

अर्थातःजबकि आकाश फट कर लाल हो जाए जैसे कि लाल त्वचा।

अर्थातःलाल त्वचा के जैसा हो जाएगा,क्योंकि وردة का अर्थ लाल है और الدِّهانका अर्थ त्वचा होता है।

द्वितीय आयत में अल्लाह ने उस दिन आकाश को तरल वस्तु के समान कहा है,अल्लाह का कथन हैः ﴿يوم تكون السماء كالمهل﴾

अर्थातःजिस दिन आकाश तेल की तेलछट जैसे हो जाएगा।

उस दिन पहाड़ टुकड़े–टुकड़े कर दिए जाएंगे यहां तक कि वे उड़ती रेत के जैसे अथवा धुने हुए उून के जैसे हो जाएंगे।ये दोनों ही विशेषताएं लगभग मिलती जुलती है,पहाड़ के टुकड़े–टुकड़े होने का उल्लेख अल्लाह तआ़ला के इस कथन में हैः ﴿**وبُسَّت الجبال بسا**﴾

अर्थातःपहाड़ के (धुने हुए उून के जैसे हवाओं में)उड़ने का उल्लेख इस आयत में आया हैः ﴿وتكون الجبال **كالعهن المنفوش**﴾

अर्थातःपहाड़ धुने हुए रंगीन उून के जैसे हो जाएंगे।

तथा अल्लाह के इस कथन मेंः ﴿وكانت الجبال **كثيبا مهيلا**﴾.

अर्थातःपहाड़ भुड़भुड़ी रेत के टीलों जैसे हो जाएंगे।

उस दिन पहाड़ों को उनके स्थानों से उखाड़ कर चला दिया जाएगा यहां तक कि वे सराब(वे रेत जो दूर से पानी जैसा लगता है)के जैसे हो जाएंगे,अल्लाह का कथन हैः ﴿وسُيرت الجبال فكانت **سرابا**﴾

अर्थातःपहाड़ चलाए जाएंगे तो वे सराब हो जाएंगे।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿وترى الجبال تحسبها جامدة وهي **تمر مر السحاب** صنع الله الذي أتقن كل شيء﴾.

अर्थातःआप पहाड़ों को देख कर अपने स्थान पर स्थिर मानते हैं किंतु वे भी बादल के जैसे उड़ते फिरेंगे।यह है अल्लाह का निर्माण जिसने प्रत्येक वस्तु को मजबूत बनाया है।

क़्यामत का एक विशाल चिन्ह यह है कि सूर्य लपेट लिया जाएगा,अल्लाह का कथन है: ﴿إذا الشمس كورت﴾

अर्थातःजब सूर्य को लपेट लिया जाएगा।

सूर्य को लपेटने का अर्थ यह है कि उसे पगड़ी के जैसे लपेट कर फेंक दिया जाएगा जिस से उसका आलोक समाप्त हो जाएगा।[1]

क़्यामत का एक बड़ा चिन्ह यह भी है कि सितारे टूट जाएंगे,अर्थात आकाश की बोलंदी से टूट कर एक के बाद एक भूमि पर गिर जाएंगे,अल्लाह ने फरमायाः

﴿وإذا النجوم **انكدرت**﴾.

अर्थातःजब सितारे प्रकाशहीन हो जाएंगे।

क़्यामत का एक विशाल चिन्ह यह भी है कि समुद्र में आग का भोंचाल आजाएगा,जैसा कि अल्लाह ने फरमायाः ﴿وإذا البحار **سُجِّرت**﴾

अर्थातःजब समद्र भर जाएंगे।

पवित्र ह वह (अल्लाह) जिसके हाथ में यह शक्ति है कि वह प्रकृति के नियमों को अपने कौनी एवं क़दरी आदेश से उलट–पलट करदेगा,अल्लाह ने फरमायाः

﴿إنما قولنا لشيء إذا أردناه أن نقول له كن فيكون﴾.

अर्थातःहम जब किसी चीज का सोचते हैं तो केवल हमारा यह कह देना होता है कि होजा,और वह हो जाता है।

3.आखिरत के दिन पर ईमान लाने में यह भी सम्मिलित है कि बास बाद अलमौत(मृत्यु पश्चात पुनःजीवित किया जाना) पर ईमान लाया जाए,इस का अर्थ यह है कि जब सूर में द्वितीय बार फूंक मारी जाएगी तो मृत्यु जीवित हो जाएंगे,पुनः जीवित होना सत्य एवं सिद्ध है,इस पर कुरान व हदीस एवं मुसलमानों की सर्व सहमति प्रमाणित हैं,अल्लाह ने फरमाया हैः

﴿ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَمَيِّتُون * ثُمَّإِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ **تُبْعَثُون**﴾.

अर्थातःउसके पश्चात फिर तुम सब निसंदेह मर जाने वाले हो।फिर क़्यामत के दिन निसंदेह तुम सब उठाए जाओगे।

---

[1] देखें:तफसीर इब्ने जरीर में उपरोक्त आयत का विवरण।

उस समय लोग अल्लाह के समक्ष खड़े होंगे,नंगे पॉव एवं निर्वस्त्र होंगे,उनका ख्तना नहीं किया होगा,वे सबके सब बिल्कुल सही होंगे,अर्थात संसार में उनके अंदर जो अवगुण थे,वे उनसे पवित्र होंगे,जैसे लंगड़ापन और अंधापन आदि।अल्लाह का कथन है:

﴿كَمَابَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّافَاعِلِين﴾.

अर्थातःजैसे कि हमने प्रथम बार पैदा किया था उसी प्रकार पुनःकरेंगे।यह हमारे ऊपर वचन है और हम इसे अवश्य करके ही रहेंगे।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको कुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको कुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

4.आप जान लें—अल्लाह आप पर कृपा करे—कि आखिरत के दिन पर ईमान लाने का एक तक़ाज़ा यह भी है कि मख़्लूकों(जीवों)को ह़श्र के मैदान(वह स्थान जहां मृत्यु उपरांत सबको जमा किया जाएगा)में जमा करने पर ईमान लाया जाए,ह़श्र का अर्थ है जीवों को उनके कब्रों से उठा कर महशर के मैदान में जमा करना,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है: ﴿وهو الذي ذرأكم في الأرض وإليه **تحشرون**﴾.

अर्थातःवही है जिसने तुम्हें पैदा करके भूमि में फैला दिया और उसी के ओर तुम जमा किए जाओगे।

इब्ने अ़ब्बास रज़ीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित है,वह कहते हैंःहमारे बीच नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उपदेश प्रस्तुत करने के लिए खड़े हुए और आपने फरमायाःतुम अल्लाह तआ़ला से इस अवस्था में मिलोगे कि नंगे पॉव,निर्वस्त्र एवं बिना ख्तने होगे।[2]

[2] इसे बोखारी(6526)एवं मुस्लिम(2860)ने वर्णित किया है।

क़्यामत के दिन लोगों को सफेद गंदुमि रंग की(हमवार)भूमि पर जमा किया जाएगा,उसमें किसी भी मनुष्य के लिए कोई सड़क चिन्ह न होगा,[3]एक पुकारने वाले की आवाज़ सबके कानों तक पहुंच सकेगी[4]और एक नजर सबको देख सकेगी।[5]जैसा कि सह़ी बोखारी[6]में अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है।

उस दिन मनुष्यों,जिन्नातों,देवदूतों एवं मवेशियों को **इकट्ठा** किया जाएगा,मनुष्य एवं जिनों के **इकट्ठा** होने का प्रमाण पूर्व आयतों में आए समानता का अर्थ है,रही पशुओं के **इकट्ठा** होने का प्रमाण तो अल्लाह तआ़ला का यह कथन उसका प्रमाण है:

﴿وما من دابة في الأرض ولا طائر يطير بجناحيه إلا أمم أمثالكم ما فرطنا في الكتاب من شيء ثم إلى ربهم يحشرون﴾

अर्थातःजितने प्रकार के जीव पृथ्वी पर चलने वाले हैं और जितने प्रकार के पक्षी जो अपने दोनों पंखों से उड़ते हैं उनमें कोई प्रकार ऐसी नहीं जो कि तुम्हारे प्रकार के दल न हों,हमने पंजी में कोई चीज नहीं छोड़ी,फिर सब अपने रब की ओर जमा किए जाएंगे।

तथा अल्लाह तआ़ला का यह कथन भी इसका प्रमाण है: ﴿وإذا الوحوش حُشرت﴾.

अर्थातःजब वह़शी जानवर **इकट्ठे** किए जाएंगे।

रही बात देवदूतों को **इकट्ठा** करने की तो इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿وجاء ربك والملك صفا صفا﴾

अर्थातःतेरा रब(स्वयं)आ जाएगा और देवदूत पंक्तियों में(आ जाएंगे)।
अतः देवदूत अपने रब के समक्ष पंक्तियों में खड़े होंगे,किंतु उनका हिसाब व किताब न होगा,क्योंकि यह उनके स्वभाव में है कि वे अल्लाह के आदेशों का पालन करते

---

[3] देखें:सह़ी बोखारी(6521)एवं सह़ी मुस्लिम(2790)सहल बिन सअ़द रज़ीअल्लाहु का वर्णन।

[4] क्योंकि पृथ्वी पर कोई एसी दीवार आदि न होगी जो ध्वनी फैलने में बाधा बन सके।

[5] अर्थात पृथ्वी एतनी हमवार होगी कि नजर उनके प्रथम मनुष्य से अंतिम मनुष्य तक पहुंच रही होगी,देखें:फत्हुलबारी,(4712)ह़दीस का विवरण।

[6] ह़दीस संख्याः(3361)

और रब की अवज्ञा नहीं करते हैं,जैसा कि अल्लाह तआ़ाला ने अपने इस कथन में उनकी यह विशषता बताई है: ﴿لا يعصون الله ما أمرهم ويفعلون ما يؤمرون﴾

अर्थातःजो आदेश अल्लाह देता है उसकी अवज्ञा नहीं करते बल्कि जो आदेश दिया जाए उसका पालन करते हैं।

अल्लाह के बंदो!आखिरत के दिन पर ईमान लाने के ये चार तक़ाज़े हैं जिन का उल्लेख हुआ,आखिरत पर ईमान उस समय तक पूरा नहीं हो सकता जब तक कि पूर्ण रूप से इन तक़ाजों़ पर ईमान न लाया जाए,पॉचवा एवं छटे तक़ाज़े के विषय में आगामी उपदेशों में चर्चा होगी।इन्शा अल्लाह

*आप यह भी जान लें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि शुक्रवार के दिन और रात में आपका सर्वश्रेष्ठ कार्य यह है कि आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजें,हे अल्लाह!अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्मद पर दरूद नाज़िल कर,आपके उत्तराधिकारी से प्रसन्न होजा,जो सत्य मार्ग पर स्थिर एवं मुसलमानों के ईमाम थे,तथा उनके अनुयायियों एवं क़यामत तक सत्य निष्ठा के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

*हे अल्लाह!इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,और अपने धर्म की रक्षा कर,हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,तू अपने और इस्लाम के शत्रुओं को नाश करदे,और अपने एकेश्वरवाद बंदों की सहायता फरमा।

*हे अल्लाह!हमें अपने देशों में शांति का जीवन प्रदान कर,हे अल्लाह!हमारे इमामों एवं हमारे शासकों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक एवं हिदायत पर चलने वाला बना दे।

*हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक़(शक्ति)प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के लिए कृपा का कारण बना।

*हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया एवं आखिरत की समस्त भलाई की प्रार्थना करते हैं जो हमको मालूम है और जो नहीं मालूम,और हम तेरा शर्ण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त बुराइयों से जो हमको मालूम है और मालूम नहीं।

*हे अल्लाह!हम तुझसे स्वर्ग मांगते हैं और वे कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कथन एवं कार्य से भी जो नरक से निकट करदे।

*हे अल्लाह!हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मृतकों पर कृपा फरमा एवं हम में से जो संकट ग्रस्त हैं,उन्हें मुक्ति प्रदान कर।

*हे अल्लाह!हमारे धर्म को सुधार दे,जो हमारे(दीन व दुनिया के)प्रत्येक कार्य की रक्षा का माध्यम है और हमारी दुनिया को सुधार दे जिस में हमारो जीविका है और हमारी आखिरत को सुधार दे जिसमें हमारा(अपने गंतव्य की ओर)लौटना है और हमारे जीवन को हमारे लिए प्रत्येक भलाई में वृद्वि का कारण बना दे और हमारी मृत्यु को हमारे लिए सब विपत्तियों से छुटकारा बना दे।

*हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई दे और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

عباد الله! إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذي القربى، وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي، يعظكم لعلكم تذكرون، فاذكروا الله العظيم يذكركم، واشكروه على نعمه يزدكم، ولذكر الله أكبر، والله يعلم ما تصنعون.

लेखकः

माजिद बिन सुलेमान अर्रसी

१५ जुलक़ादा **१४४२**हिजरी

जूबैल–सउूदी अ़रब

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान ह़िफज़ुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com